



SHRI RAMESH PARMAR

Shri Ramesh Parmar is a well known handicraft artist and engaged with manufacturing of tribal dolls, traditional tribal dresses and tribal toys for last 30 years. His contribution towards establishing this tribal product as identity of region all over India by participating in handicraft fairs is significant.

2. Born on 1st May, 1963 at Ratitalai, Jhabua, Shri Parmar got married to Smt. Shanti Parmar in 1981. Despite belonging to Scheduled Caste, having grown up in tribal area they had strong inclination towards tribal traditions from the beginning. Both Shri and Smt. Parmar had indomitable desire to preserve these traditions and symbols associated with them, which were being eroded by the slaps of modernity. To fulfill this desire, Smt. Shanti Parmar got an opportunity in the year 1993 when she participated in entrepreneurship training from Udhyamita Vikas Kendra, Jhabua. The guidance and encouragement received in this training changed the direction of the couple's life and they took initiative to introduce the new generation to ancient traditions through tribal dolls and other related products. Due to social and regional conditions of that time he had to struggle a lot. Due to living in backward area like Jhabua he had to depend on the neighboring state Gujarat to bring even raw material for this work. But the couple did not give up and despite many hurdles he received a district level award from Jhabua Collector and his dreams got new wings and after this, he did not look back. He realized that this art cannot be preserved for the purpose of earning their own living, so to make this art popular among the masses, other youths should be involved. To connect with this, he started giving training in this art form. To achieve their goal he restarted nearly dead Prashikshit Ayodhyogik Kamgar Samitee and through it started organizing training camps at various places across the district. Till now he has trained more than 1000 such young artisans and all of them are proficient in this art and employing the art to earn livelihood.

3. Shri Parmar started to participate in Handicrafts fairs at various places across the country with aim to acquaint the common people with tribal culture. He has participated in more than 100 such National and State fairs across the country which includes Kalidas Samaroh Ujjain. At present he is participating in various national and international fairs under the aegis of Mahkaleshwar Swayam Sahayat Samooh under The Urban Livelihood Mission.



श्री रमेश परमार

श्री रमेश परमार एक प्रसिद्ध हस्तशिल्प कलाकार हैं और पिछले 30 वर्ष से जनजातीय गुड़िया, पारंपरिक जनजातीय पोशाक और जनजातीय खिलौनों के निर्माण में लगे हुए हैं। पूरे भारत के हस्तशिल्प मेलों में भाग लेकर इस जनजातीय उत्पाद को क्षेत्र की पहचान के रूप में स्थापित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

2. 1 मई, 1963 को रातीतलाई, झाबुआ में जन्मे, श्री परमार का विवाह 1981 में श्रीमती शांति परमार से हुआ। अनुसूचित जाति से होने के बावजूद, जनजातीय अंचल में पले-बढ़े होने के कारण शुरू से ही जनजातीय परंपराओं के प्रति इनका गहरा झुकाव था। पति-पत्नी दोनों की यह अदम्य इच्छा थी कि आधुनिकता के थपेड़ों से नष्ट हो रही इन परंपराओं और प्रतीकों को संरक्षित किया जाए। इस इच्छा को पूरा करने के लिए, वर्ष 1993 में श्रीमती शांति परमार को एक मौका मिला, जब उन्होंने उद्यमिता विकास केंद्र, झाबुआ से उद्यमिता प्रशिक्षण में भाग लिया। इस प्रशिक्षण में मिले मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने दंपति के जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने नई पीढ़ी को जनजातीय गुड़िया और दूसरे संबंधित उत्पादों के जरिये प्राचीन परंपराओं से परिचित कराने की पहल की। उस समय की सामाजिक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। झाबुआ जैसे पिछड़े इलाके में रहने के कारण इस काम के लिए कच्चा माल तक लाने के लिए पड़ोसी राज्य गुजरात पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन दंपति ने हार नहीं मानी और कई बाधाओं के बावजूद उन्हें झाबुआ कलेक्टर से जिला स्तरीय पुरस्कार मिला। इससे उनके सपनों को नए पंख मिले और इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने महसूस किया कि जीवनयापन के लिए इस कला को संरक्षित नहीं किया जा सकता, इसलिए इस कला को जन-जन में लोकप्रिय बनाने के लिए अन्य युवाओं को इसमें शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्होंने इस कला का प्रशिक्षण देना शुरू किया। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने मृतप्राय प्रशिक्षित औद्योगिक कामगार समिति को फिर से शुरू किया और इसके जरिये जिले भर में विभिन्न स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना शुरू किया। अब तक वे ऐसे 1000 से अधिक युवा कारीगरों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। वे सभी इस कला में दक्ष हैं और इस कला से अपनी आजीविका कमा रहे हैं।

3. आम लोगों को जनजातीय संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से, श्री परमार ने देश के विभिन्न स्थानों पर आयोजित हस्तशिल्प मेलों में भाग लेना शुरू किया। उन्होंने देश भर में 100 से ज्यादा ऐसे राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय मेलों में भाग लिया है जिसमें कालिदास समारोह, उज्जैन भी शामिल है। वर्तमान में, वे द अर्बन लाइविलिहुड मिशन के तहत महाकालेश्वर स्वयं सहायता समूह के तत्वावधान में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मेलों में भाग ले रहे हैं।



SMT. SHANTI PARMAR

Smt. Shanti Parmar is a well known handicraft artist and engaged with manufacturing of tribal dolls, traditional tribal dresses and tribal toys for last 30 years. Her contribution towards establishing this tribal product as identity of region all over India by participating in handicraft fairs is significant

2. Born on 15th July, 1968 at nearby village Bhagor, Smt. Parmar got married to Shri Ramesh Parmar in 1981. Despite belonging to Scheduled Caste, having grown up in tribal area they had strong inclination towards tribal traditions from the beginning. Both Shri and Smt. Parmar had indomitable desire to preserve these traditions and symbols associated with them, which were being eroded by the slaps of modernity. To fulfill this desire, she got an opportunity in the year 1993 when she participated in entrepreneurship training from Udhyamita Vikas Kendra, Jhabua. The guidance and encouragement received in this training change the direction of the couple's life and took initiative to introduce the new generation to ancient traditions through tribal dolls and other related products. Due to social and regional conditions of that time she had to struggle a lot. Due to living in backward area like Jhabua she had to depend on the neighboring state Gujarat to bring even raw material for this work. She did not give up and despite many hurdles she received a district level award Jhabua Collector and her dreams got new wings and after this, she did not look back. She realized that this art cannot be preserved for the purpose of earning their own living, so to make this art popular among the masses, other youths should be involved. To connect with this, she started giving training in this art form. To achieve their goal she restarted nearly dead Prashikshit Ayodhyogik Kamgar Samitee and through it started organizing training camps at various places across the district. Till now she have trained more than 1000 such young artisans and all of them are proficient in this art and employing the art to earn livelihood.

3. Smt. Parmar started to participate in Handicrafts fairs at various places across the country with aim to acquaint the common people with tribal culture. She has participated in more than 100 such National and State fairs across the country which includes Kalidas Samaroh Ujjain. At present she is participating in various national and international fairs under the aegis of Mahakaleshwar Swayam Sahayat Samooh under The Urban Livelihood Mission.



श्रीमती शान्ति परमार

श्रीमती शान्ति परमार एक प्रसिद्ध हस्तशिल्प कलाकार हैं और पिछले 30 वर्ष से जनजातीय गुड़िया, पारंपरिक जनजातीय पोशाक और जनजातीय खिलौनों के निर्माण में लगी हुई हैं। पूरे भारत के हस्तशिल्प मेलों में भाग लेकर इस जनजातीय उत्पाद को क्षेत्र की पहचान के रूप में स्थापित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

2. 15 जुलाई, 1968 को नजदीकी गांव भगोर में जन्मी, श्रीमती परमार का विवाह 1981 में श्री रमेश परमार से हुआ। अनुसूचित जाति से होने के बावजूद, जनजातीय अंचल में पले-बढ़े होने के कारण शुरू से ही जनजातीय परंपराओं के प्रति इनका गहरा झुकाव था। पति-पत्नी दोनों की यह अदम्य इच्छा थी कि आधुनिकता के थपेड़ों से नष्ट हो रही इन परंपराओं और प्रतीकों को संरक्षित किया जाए। इस इच्छा को पूरा करने के लिए, वर्ष 1993 में श्रीमती शान्ति परमार को एक मौका मिला, जब उन्होंने उद्यमिता विकास केंद्र, झाबुआ से उद्यमिता प्रशिक्षण में भाग लिया। इस प्रशिक्षण में मिले मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने दंपति के जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने नई पीढ़ी को जनजातीय गुड़िया और दूसरे संबंधित उत्पादों के जरिये प्राचीन परंपराओं से परिचित कराने की पहल की। उस समय की सामाजिक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। झाबुआ जैसे पिछड़े इलाके में रहने के कारण इस काम के लिए कच्चा माल तक लाने के लिए पड़ोसी राज्य गुजरात पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन दंपति ने हार नहीं मानी और कई बाधाओं के बावजूद उन्हें झाबुआ कलेक्टर से जिला स्तरीय पुरस्कार मिला। इससे उनके सपनों को नए पंख मिले और इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने महसूस किया कि जीवनयापन के लिए इस कला को संरक्षित नहीं किया जा सकता, इसलिए इस कला को जन-जन में लोकप्रिय बनाने के लिए अन्य युवाओं को इसमें शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्होंने इस कला का प्रशिक्षण देना शुरू किया। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने मृतप्राय प्रशिक्षित औद्योगिक कामगार समिति को फिर से शुरू किया और इसके जरिये जिले भर में विभिन्न स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना शुरू किया। अब तक वे ऐसे 1000 से अधिक युवा कारीगरों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। वे सभी इस कला में दक्ष हैं और इस कला से अपनी आजीविका कमा रहे हैं।

3. आम लोगों को जनजातीय संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से, श्रीमती परमार ने देश के विभिन्न स्थानों पर आयोजित हस्तशिल्प मेलों में भाग लेना शुरू किया। उन्होंने देश भर में 100 से ज्यादा ऐसे राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय मेलों में भाग लिया है जिसमें कालिदास समारोह, उज्जैन भी शामिल है। वर्तमान में, वह द अर्बन लाइविलिहुड मिशन के तहत महाकालेश्वर स्वयं सहायता समूह के तत्वावधान में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मेलों में भाग ले रही हैं।